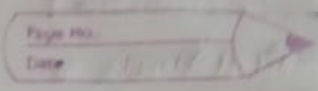


संस्कृत सामान्यम् ।

उपशास्त्री II

अतिवार्षिकम् ।

शब्दरूपाणि ।



चनुष्

विक्रितः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	चनुः	चनुषी	चनुषि
द्वितीया	॥	॥	॥
तृतीया	चनुषा	चनुष्याम्	चनुषिः
चतुर्थी	चनुषे	॥	चनुष्यः
पञ्चमी	चनुषः	॥	॥
षष्ठी	॥	चनुषीः	चनुषाम्
सप्तमी	चनुषि	॥	चनुषु
सम्बोध	हे चनु !	हे चनुषी !	हे चनुषि !

इसी प्रकार चपुष्, चक्षुष्, चजुष् आदि शब्दों के रूप बनेंगे ।

*(Signature)*

डॉ. निर्मल कुमार झा (सं. प्राचार्य)  
रा. उ. सं. महावि. सुखसैना, पूर्णियाँ ।

साहित्यम् ।

शास्त्री

द्वन्द्वविचारः ।

Page No.:

Date:

अतिजगती → इस द्वन्द्व के प्रत्येक पाद या चरण में 13 (तेरह) अक्षर होते हैं। अंतिम (पादान्त) अक्षर गुरु होता है।

इसी द्वन्द्व के अन्य भेदों में क्षमा, प्रहर्षिणी, मत्प्रभूरम्, आतेरुचिरा, मञ्जुभाषिणी तथा चन्द्रिका द्वन्द्व आते हैं।

“प्रहर्षिणी द्वन्द्वलक्षणम्” →

“स्त्री जौ गस्त्रिदशचतिः प्रहर्षिणीयम् ।”

तीन तथा दस अक्षर पर चति।

इस अतिजगती द्वन्द्व के भेद प्रहर्षिणी द्वन्द्व के प्रत्येक पाद में अक्षरों के क्रम मगण, नगण, जगण, रगण तथा अंत में एक गुरु अक्षर के अनुसार होता है।

यथा →

<u>म</u>	<u>ग</u>	<u>ण</u>	<u>न</u>	<u>ग</u>	<u>ण</u>	<u>ज</u>	<u>ग</u>	<u>ण</u>	<u>र</u>	<u>ग</u>	<u>ण</u>	<u>गुरु</u>
S	S	S					S		S		S	S
चति						चति						

वि द्वां सो, यदि म म दोष मुदिरे यु र्द्युः  
 य द्वा तै, गु ण ग ण मै व की, तै ये युः।  
 त त्रु ल्यं, ब त म नु तै म नो, म दी यं  
 उ ल्कृ ष्टं, य दि पु न रे व सा, ह म न्दः।

विद्वांसो, यदि मम दोषमुदिरेयु र्द्युः तै, गुणगणमेव कीर्तयेयुः।  
 तत्रुल्यं, बत मनुते मनो, मदीयं, उल्कृष्टं, यदि पुनरेवमाह मन्दः।

*Handwritten signature*

डॉ० निर्मल कुमार झा, (सं प्राचार्य)

रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ ।

20-09-2020

उपशास्त्री I

संस्कृतसामान्यम् ।

अनिवार्यपत्रम् ।

Page No.

Date :

सखि ( इकारान्त, पुल्लिङ्ग )

विभक्तिः - एकवचनम्      द्विवचनम्      बहुवचनम्

प्रथमा      सखा      सखाद्यौ      सखायः

द्वितीया      सखायम्      "      सखीन्

तृतीया      सख्या      सखिभ्याम्      सखिभिः

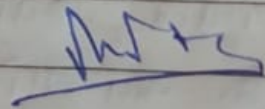
चतुर्थी      सख्ये      "      सखिभ्यः

पञ्चमी      सख्युः      "      "

षष्ठी      "      सख्योः      सखीनाम्

सप्तमी      सख्यौ      "      सखिषु

सम्बोधन - हे सखे !      हे सखाद्यौ !      हे सखायः !



डॉ० निर्मल कुमार झा, (सं० प्राचार्य)  
रा० ३० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ